## अनुक्रम


- शमशेर की कविताओं में शाम के विविध रूप
- कहे कवि रेणु की कविताई
- गहरे सौंदर्यानुभवों के कवि रामदरश मिश्र
- आधुनिक हिन्दी कविता के उत्कर्ष काल में राष्ट्रीय चेतना
- लोक सौंदर्य को शास्त्र में बाँधता प्रगतिवादी सौंदर्यशास्त्र
- हरिवंशराय बच्चन की व्यक्तिवादी कविता
- प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध सरोकार
- हिन्दी कहानियों में निरूपित आदिवासी समाज (आदिवासी चर्चित कहानियों के संदर्भ में)
- मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी चेतना
- संघर्ष करके साक्षर होने की कथा मुर्दहिया
- दलित लोकजीवन का सौंदर्य प्रतीक मुर्दहिया
- स्वतंत्रतापूर्व की हिन्दी गुजराती आलोचना
- हिन्दी समीक्षा में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान
- छायावाद और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और रामनारायण विश्वनाथ पाठक का रस चिंतन
- एक साहित्यिक डायरी के भीतर बाहर मुक्तिबोध
- गाँधी कल और आज
- शमशेर की आलोचना दृष्टि
- हिन्दी में रोजगार के लिए अनुवाद की भूमिका
- गुजरात के हिन्दी साहित्यकार
- गुजरात के हिन्दी निबंधकार

## डॉ. राजेन्द्र परमार

| | | |
|---|---|---|
| **जन्म** | : | 3 जुलाई 1985 (रींछरोटा, तहसील-गोधरा, जिला- पंचमहाल, गुजरात) |
| **शिक्षा** | : | एम.ए. (स्वर्ण पदक), एम.फिल., पीएच.डी. भाषा-साहित्य भवन, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात) NET, SLET उत्तीर्ण |
| **प्रकाशन** | : | 1. औद्योगीकरण के परिप्रेक्ष्य में रंगभूमि की समीक्षा<br>2. हिन्दीनी वीणेली वार्ताओं<br>3. आपणा विवेचकों<br>4. साहित्य के नये सौंदर्यशास्त्र (संपादन) |
| **आलेख** | : | 30 से अधिक आलेख राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित |
| **संप्रति** | : | हिन्दी विभाग, भाषा-साहित्य भवन, गुजरात विश्वविद्यालय में कार्यरत |
| **पता** | : | 6, लेक्चर्स रो-हाउस, गर्ल्स हॉस्टेल के पास, गुजरात विश्वविद्यालय कैम्पस नवरंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) - 380009 |
| **चलभाष** | : | 9723527487, 8780436495 |
| **ई-मेल** | : | rrparmar@gujaratuniversity.ac.in |



Also available at : flipkart amazon

₹595.00

ISBN 978-93-91635-12-1

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

ए-685 कैनाल रोड, आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता कानपुर

Email : utkarshpublishersknp@gmail.com

Mob. : 8707662869, 9554837752


आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध परिप्रेक्ष्य • डॉ. राजेन्द्र परमार

# आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध परिप्रेक्ष्य

डॉ. राजेन्द्र परमार

मुक्तिबोध ने इस डायरी में अपने निजी जीवन के बारे में बहुत ही कम लिखा है। यों डायरी विधा होती ही है व्यक्तिगत जीवन का लेखा-जोखा। पर यहाँ तो है एक साहित्यिक की डायरी, जिसमें साहित्य, साहित्यिक मान्यताओं, समाज, देश के प्रश्नों, समस्याओं के अलावा भला और क्या हो सकता है। 'एक साहित्यिक की डायरी' के निबंधों में जहाँ कहीं भी मुक्तिबोध ने अपने आपको आईने में खड़ा किया है वहाँ अपने जीवन के बारे में हलका संकेत कर दिया है। मुक्तिबोध जिन्दगी को महाविद्यालय या विश्वविद्यालय नहीं बल्कि प्राइमरी स्कूल का दर्जा देते हैं, जहाँ गुणा-भाग की कतर ब्यौंत करनी ही पड़ती है, तभी जिंदा रह सकते हैं। वे लिखते हैं ''सोचा था कि जल्दी-जल्दी बड़ा हो जाऊँगा। ऊँचा, तगड़ा, मोटा। फिर जिन्दगी प्राइमरी स्कूल न रहेगी। लेकिन नहीं। ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया खून सूखता गया। ऊँचा हुआ, साथ ही जर्जर भी। जिन्दगी पहले से भी बदतर प्राइमरी स्कूल होती गयी। जी हाँ, जिन्दगी भर पाठ पढ़ना है। सिर्फ पहाड़े पढ़कर ही काम नहीं चलने का। गुणा-भाग की नयी से नयी कतर ब्यौंत करनी ही पड़ेगी। अंगुलियों में स्याही, कमीज पर नीले दाग, होठों के एक सिरे पर नीला रंग। मरने तक प्राइमरी स्कूल ही रहेगी यह जिंदगी।'' मुक्तिबोध को पैसों की दिक्कत हमेशा रहती थी। घर में सबसे बड़े होने क कारण परिवार की जिम्मेदारी उनके सिर पर थी। वे जीवन भर आर्थिक कठिनाईयों का सामना करते रहे। उनका बैंक में अकाउन्ट तक नहीं था। जहाँ जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो वह व्यक्ति भला बैंक में अकाउन्ट खुलवाकर क्या करेगा? उनका पूरा जीवन संघर्ष का पर्याय था 'एक लम्बी कविता का अंत' निबंध में उनके व्यक्तिगत जीवन की झलक मिलती है।

इसी पुस्तक से...